गतांक से आगे ...

भगवान से हमारी मित्रता, पवित्रता पर आधारित है

मित्रता अर्थात दो सच्चे दिलों का मिलन। अगर एक मित्र सच्चा न हो, धोखा देता हो तो मित्रता समाप्त हो जाती है। हमारी ईश्वर से मित्रता की नींव पवित्रता ही है और हमारी यह मित्रता तब ही स्थाई होती है जब हम उसमें पूर्ण वफादार हों। हम यदि गुह्यता से विचार करें तो एक भी अपवित्र संकल्प उठाना अपने उस परम मित्र को धोखा देना है और तब यह मित्रता नि:संदेह ही टूट जाएगी और हम उसके स्नेह और सहयोग से वंचित हो जायेंगे। अन्यथा तो वह परममित्र सर्वथा ही हमारा साथ निभाता है।

पवित्रता की शक्ति का सदुपयोग करें

ब्रह्मचर्य का असीम बल हमारे शरीर में संचित होता रहता है, परन्तु पतित तत्वों से बना हुआ यह शरीर उस शक्ति को अपने में समा नहीं सकता। जबकि सतयुग में वह शक्ति पावन तत्वों में विलीन होती रहती है और देवों के जीवन को दिव्य बनाये रखती है। अत: अब यदि हम उस शक्ति का रूपांतरीकरण कर पाते हैं तो पुन: उस स्थिति को प्राप्त कर सकते हैं।

जब वैज्ञानिकों ने यह सिद्धान्त खोज निकाला कि पदार्थ को ऊर्जा में बदला जा सकता है तो उससे संहारक यन्त्रों का निर्माण हुआ। पहले यह ही मान्यता थी कि पदार्थ, पदार्थ ही रहेगा, उसे ऊर्जा में नहीं बदला जा सकता। इसी प्रकार योगाभ्यास द्वारा ब्रह्मचर्य से संचित इस शक्ति को उर्ध्वगामी करके सूक्ष्म ऊर्जा में बदल दिया जाता है और फिर वह सूक्ष्म ऊर्जा हमारे मस्तिष्क को बहुत दिव्य व शक्तिशाली बना देती है, क्योंकि जब हम अपने मन बुद्धि को परमधाम में परमपिता के स्वरूप पर एकाग्र करते हैं तो हमारी सभी नस-नाड़ियो का खिंचाव भी ऊपर की ओर हो जाता है और शक्ति उर्ध्वगामी हो जाती है।

दूसरा, पवित्रता की शक्ति का उपयोग मनन-चिन्तन में भी होता है। अत: पवित्रता के अभ्यासी को मनन पर पूर्ण ध्यान देना चाहिए। इससे शक्ति का रूपान्तरीकरण भी हो जायेगा और फलस्वरूप उस शक्ति की अधिकता से उत्पन्न व्यर्थ संकल्पों से भी मुक्ति मिल जायेगी। तो मनन में भी उस शक्ति का उपयोग होता है और यही कारण है कि चिन्तक मनुष्य कभी मोटे नहीं होते।

उस शक्ति के उपयोग का तीसरा साधन है - परिश्रम। जैसे सर्वविदित है कि खेत में काम करने वाला बैल भी ब्रह्मचारी है। उसकी शक्तियों का प्रयोग परिश्रम में हो जाता है। जबकि साँढ़ विकारी है परन्तु मोटा ताजा होता है, क्योंकि स्वछंद है। अत: उस शक्ति को प्रयोग करने हेतु सच्चे योगियों को शारीरिक काम से जी नहीं चुराना चाहिए।

ब्रह्मचर्य का असीम बल हमारे शरीर में संचित होता रहता है। परन्तु पतित तत्वों से बना हुआ यह शरीर उस शक्ति को अपने में समा नहीं सकता। जबकि सतयुग में वह शक्ति पावन तत्वों में विलीन होती रहती है और देवों के जीवन को दिव्य बनाये रखती है। अत: अब यदि हम उस शक्ति का रूपान्तरीकरण कर पाते हैं तो पुन: उस स्थिति को प्राप्त कर सकते हैं।

इस प्रकार इस शक्ति का उपयोग करने से वह हमारे मन को प्रज्वलित नहीं करेगी।

पवित्र आत्मा को अन्तर्मुखी होना चाहिए।

एक समझदार व्यक्ति या शक्तियों व ईश्वरीय खजानों से भरपूर आत्मा अवश्य ही अन्तर्मुखी होती है। अगर कोई पवित्र रहने वाली आत्मा बाह्यमुखी हो, वाचा रस में तल्लीन रहती हो तो भला उसकी पवित्रता में विश्वास भी कौन करेगा! यदि कामाग्नि को योगाग्नि में बदलने में, कोई आत्मा असमर्थ रहती है तो उसका प्रगटीकरण बाह्यमुखता, क्रोधाग्नि, ईर्ष्या-द्वेष की अग्नि या चिड़चिड़ेपन की अग्नि के रूप में होता है जबकि पवित्रता चित्त को शीतल कर के मन में सुखदायी शुभ-भावना को जन्म देती है।

ईश्वरीय पथ पर अपवित्रता महा-महा पाप है

यदि किसी किसान ने रेगिस्तान में एक सुंदर बगीचा बनाया हो, कठिन परिश्रम से उसमें सुंदर सुंदर खुशबूदार फूल उगाये हों जिससे सम्पूर्ण क्षेत्र महक उठा हो और कोई दुराचारी उस बगीचे को नष्ट करने लगे, फूलों को झुलसाने लगे तो उस किसान पर क्या बीतेगी और यह कितना बड़ा पाप होगा!

इसी प्रकार परमपिता, जो कि एक अद्भुत बागवान भी है, इस कलियुगी मरुस्थल में रूहों को पवित्र बना रहे हैं। कितने वर्षो से और बड़ी ही दिव्य मेहनत से वे पवित्र सृष्टि के निर्माण का कार्य कर रहे हैं, एक दिन ऐसा आयेगा जब पवित्र रूहों रूपी पुष्पों से सम्पूर्ण जगत महक उठेगा, और यदि कोई मनुष्य उन पवित्र फूलों की ओर बुरी नज़र डाले, उनकी सुगन्धि को नष्ट करना चाहे तो उसका यह कितना भयंकर दुष्कर्म होगा? क्या वे आत्माएं उनके परम प्यार की अधिकारी होंगी?

हमें इस प्रकार चिन्तन करना चाहिए कि इन चेतन फूलों को स्वयं परमपिता ने सुगन्धित बनाया है। हम इनकी सुगन्ध में दुर्गन्ध न मिलायें, अन्यथा यह महापाप होगा। किसी पवित्र आत्मा के लिए एक भी अपवित्र संकल्प उठाना महापाप है। जैसे यदि कोई मनुष्य श्री लक्ष्मी या सरस्वती देवी के मन्दिर में जाकर उन्हें कुदृष्टि से देखे, तो उसे कितना बड़ा पापी कहेंगे। तो यह महापाप की स्मृति भी आत्मा को इस पाप से मुक्त कर देगी।

इस प्रकार प्रतिदिन चिन्तन करते हुए हमें यह देखना होगा कि हमारा हर कदम, हर संकल्प हमें हमारी सम्पूर्ण पवित्रता की ओर ले चले। हमारा रास्ता लम्बा अवश्य है परन्तु सुखदायी है और हमारा परममित्र हमारे मन को बहलाने के लिए सदा साथ है। अत: यदि इसमें कोई छोटी गलती या स्वप्न में भी गलती हो जाती है तो जीवन में निराशा के बीज नहीं बोने चाहिए बल्कि बहुत ही धैर्यता व दृढ़ता के साथ अपने लक्ष्य की ओर दौड़ना चाहिए।

कैसे हों नववर्ष... -पेज 8 का शेष क्वालिटी पर हम ध्यान नहीं दे पाते। जिससे हम अपने विचारों को शक्तिशाली व उपयोगी नहीं बना पाते। ऐसे सोच/संकल्पों रूपी खज़ाने का हम सही उपयोग करने की जगह उसे व्यर्थ गँवा देते हैं। एकाग्रता और सकारात्मकता के साथ जब हम संकल्प करेंगे तभी हमारे संकल्प शक्तिशाली होंगे और हमारे सभी कार्य सहज ही सफ़लता को प्राप्त हो जाएंगे। प्राय: असफ़लता तब प्राप्त होती है जब हम अपने संकल्पों-विकल्पों पर अटेंशन न देकर अपने निर्धारित लक्ष्य से भटक जाते हैं। ऐसे समय में हमारा मन एकाग्रचित्त न होकर किसी विषय,वस्तु या व्यक्ति में फंसकर भटक जाता है। अत: नववर्ष में अपने संकल्पों को शक्तिशाली एवं प्रभावशाली बनाने हेतु हमें अपने सोचने की शक्ति को दूसरों का कल्याण करने हेतु तथा सदा निमित्त भाव में रहकर कार्य करने में लगाना चाहिए।

ध्यान व योग की लें मदद - ध्यान व योग का जीवन में प्रयोग करके हम अपनी संकल्प-शक्ति को शुभ, कल्याणकारी तथा श्रेष्ठ बना सकते हैं। योग द्वारा स्वयं का सम्पूर्ण स्नेह परमपिता परमेश्वर शिव से जोड़ लें तो हमारी बुद्धि और संकल्प सात्विक व शुभ भावना से सजे-धजे बन जाएँगे। ध्यान-योग के निरंतर अभ्यास से आत्म-ज्योत जग जाती है और कर्मेन्द्रियों पर मन का नियंत्रण होने लगता है जिससे मन में उठने वाले सूक्ष्म संकल्पों की भी हम चेकिंग कर सकारात्मक संकल्पों को कार्य में ला सकते हैं। पुरुषार्थ या योग (ईश्वर को याद करने) से हमारे संकल्पों/सोच में परिवर्तन आता है। संकल्प से फिर कर्मों में और कर्मों में बदलाव आने से फिर से संस्कारों में फेर-बदल होता है। अत: योगी तू आत्मा बनकर अपनी संकल्प शक्ति को सही दिशा दीजिए जिससे स्वयं के तथा विश्व के कल्याण/परिवर्तन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएं नए साल में।

पोखरा-नेपाल। ब्र.कु. परिणीता को मामेन्टो देकर सम्मानित करते हुए विंध्यवासिनी धार्मिक क्षेत्र विकास समिति के अध्यक्ष गणेश बहादुर श्रेष्ठ एवं उपाध्यक्ष योगेन्द्र प्रधान।

रायकोट-लुधियाना। एस.एम.ओ. पी.एस. सुखमिंदर सिंह को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. प्रवीण तथा अन्य।

गायघाट-विहार। बिहार विधानसभा प्रतिपक्ष के नेता नंदकिशोर यादव को चैतन्य दुर्गा की झाँकी के उद्घाटन के पश्चात् ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. रानी, ब्र.कु. खुशबू तथा अन्य।

हाजीपुर-विहार। चैतन्य दुर्गा की झाँकी का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए नगर निगम के चेयरमैन मोहम्मद हैदर अली, ब्र.कु. अंजली, ब्र.कु. आरती तथा अन्य।

देवघर-वैधनाथ। आध्यात्मिक कार्यक्रम के पश्चात् सभी प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया बंधुओं के साथ ब्र.कु. रीता, ब्र.कु. मोहिणी एवं ब्र.कु.रेखा।

दिल्ली-न्यू फ्रेन्डस कॉलोनी। ज्ञान चर्चा करने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु.सुजाता, ब्र.कु.संध्या, डॉ. अरूणा तथा अन्य।